



निर्माण IAS

HEAD OFFICE: 12, Mall Road, Hudson Lane, Kingsway Camp, Delhi-9

CLASS ROOM: 624, 2nd Floor, Main Road Mukherjee Nagar, Near Agarwal Sweet, Delhi-9

Ph.: 011-47058219, 9990765484, 9891327521

परीक्षार्थी का नाम/ Name of the Candidate: ...Sakshi...Gupta.....

रोल नं./ Roll No:158.....फोन नं./ Phone No:

दिनांक/ Date of Examination:14/07/2015.....

विषय/ Subject: Geography

सामान्य अध्ययन

(भूगोल)

36
80

प्रश्न संख्या Question No.	पूर्णांक:- 80 सभी प्रश्न अनिवार्य है।	समय:- 90 मिनट इस भाग में कुछ न लिखें (Don't write anything in this part)
-------------------------------	--	--

प्रश्न 1. पृथ्वी एवं भूपृष्ठ के निर्माण प्रक्रिया को समझाएं। (100 शब्द) (10 अंक)

पृथ्वी के निम्न से 100 किमी गहराई तक हल्के धनत्व के चट्टानों से निर्मित श्वसी सतह (धनत्व 2.75 g/cm³) ही मू-पृष्ठ कहलाती है। इसके अन्तर्गत ब्रेसिटिक मषासागर तथा ग्रीनाइट रुणी महाद्वीप पाए जाते हैं।

आज से भगवान् 4.5 अरब वर्ष पूर्व पृथ्वी के निर्माण के अन्तर्गत श्वसी के कारण हल्के धनत्व के चट्टान मष्टि के कम धनत्व के चट्टान बहर की श्रीश शक्तित ही गर्म ऊँज़ वाहरी कातावरण व पृथ्वी के ताप में श्रीनगर के कारण पृथ्वी असंतुष्टता की स्थिति अस्ति छुई और पृथ्वी का वाहरी आवरण (भगवान् 3.5 अरब वर्ष पूर्व) ठोस होने से रक्षा क्रिस्टलीयकृत संरचना की निर्मित हुई, जिसे मू-पृष्ठ कहते हैं।

मू-पृष्ठ क्या है? → मू-पृष्ठ के नाम? (क्विज बोंग जारी)



निर्माण IAS

Ph.: 011-47058219, 9990765484, 9891327521



प्रश्न संख्या
Question No. Name.....

U.P.S.C.

इस भाग में
कुछ न लिखें
(Don't write
anything in
this part)

Roll No.....

पैदों क्षमता - थाम घृष्ण (abs aimtro)
थाम फॉर्मेंट (अफी टोन)

प्रश्न 2. ज्वालामुखी क्रिया एवं स्टेट विवर्तनिकी में अंतरसंबंध को स्पष्ट करें। (100 शब्द) (10 अंक)

पृथ्वी के आन्तरिक भाग में घूसंरचनाओं में व्याप्त असमानताएँ के कारण हुई हैं इसलिए से उच्च ताप व ऊर्बा पर मूर्गार्थीय तम मैंगमा का द्विध पा दशें से सतह पर आना ही ज्वालामुखी है, तथा मैंगमा के सतह के ऊपर आकर शीतल होकर ठीस लावपुक्त ज्वालामुखीय स्फारातिकों का निर्माण होने तक की समूर्ण प्रक्रिया ज्वालामुखीयता कहलाती है।

मूर्गार्थीय हैलियल से उत्तर सेवहीय तरंगों द्वारा घू-घृष्ण की सतह तोड़कर द्विध (फ्लैट) व प्लाश (विवर्तनिकी) से मैंगमा बाहर निकलने की प्रक्रिया तीन प्रकार की होती है अपसरन, अभिसरन व संरक्षण। → अप्सर ?

छेलों के पिण्डलने से निर्मित मैंगमा जब विभजनीय क्रिया द्वारा प्रशीर्ण द्वारा शतह पर प्रकट होता है तो इसे अपसरन कहते हैं तथा भल मैंगमा इसमें बिस्तिक मैंगमा महासागरीय कटक का निर्माण करता है इसी पर लगभग 11% ज्वालामुखी छात्ता इसी प्रक्रिया पर आधारित



निर्माण IAS

Ph.: 011-47058219, 9990765484, 9891327521

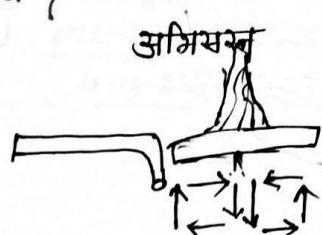
U.P.S.C.

इस भाग में
कुछ न लिखें
(Don't write
anything in
this part)

हैं, जब अत्यधिक Convalescence किया जाता है तो ताप व दाढ़ पर
मौजूदा प्रवाह (ड्रीनेइट रूफी) बाहर आ लित उत्पत्ति का निर्माण
करता है अभियासन किया करता है, इस पृथ्वी पर होने वाली
84% धूलांश इस पर तयों 5%, ज्वालामुखी घटना संरक्षी सीमान्
पर आषाढ़ित होती है जो परस्पर प्रत्येक के Convolvence से
जनता है। निपाल 9 - 2-3 line

उल्लंघन वलवा
दी गई है
Q. प्र० ८

महात्मा गांधी
उपचार, रोगी
को explain
with example
and figure



प्रश्न 3. पृथ्वी के दाढ़ पेटी का निर्माण एवं उसका प्रभाव। (100 शब्द)

— (10 अंक)

पृथ्वी के अणीप धूकाव, धूर्णल व धूर्णतप में भिन्नता के
कारण वायुमण्डलीय परिसंचरण, त्रिपात्ति तपा अन्म कई कारणों
से दाढ़ के वितरण में भिन्नता पायी जाती है। यिस कारण
चार उच्च व तीन निम्न दाढ़ चैटी की निर्मित होती है दाढ़ में व्यापक $10^{\circ}-10^{\circ} N-S$
भिन्नता के कारण इसे चार भागों विषुवत रेखाओं निम्न दाढ़ चैटी ($50^{\circ}-90^{\circ}$)
ओण्ठा उच्च भार पेटी ($30^{\circ}-35^{\circ}$ गति जन्म), उपधूवीय निम्न दाढ़ चैटी
($60^{\circ}-65^{\circ}$ गति जन्म) तथा धूवीय उच्च दाढ़ चैटी ($70^{\circ}-90^{\circ}$ ताप जन्म)
की विभाजित किया गया है।

$10^{\circ}-10^{\circ}$
 $25^{\circ}-35^{\circ} N$
 -35°

दृढ़ों के निकट

उपधूवीय निम्न दाढ़ चैटी का निर्माण
विषुवतीय रेखा से चली वायु के कुछ भाग के अवतारित होने से
 $60^{\circ}-65^{\circ}$ अशंक्ष पौनी गोलार्धी में होता है। विशेषक बल अपितु
धूवीय रेखा से कम होता है परन्तु वायु के हल्की होने के कारण
जह वायु की विशेषता कर देता है जिससे निम्न तापमान होने
पर भी यहाँ निम्न दाढ़ ही बना रहता है।

गोहिन
ज्ञाता

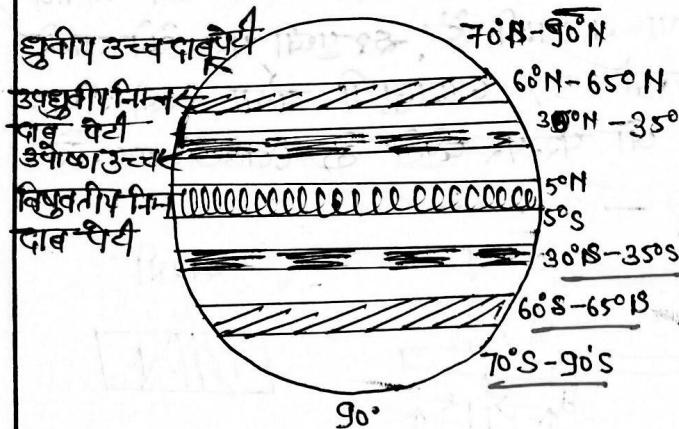
दाढ़ चैटीयों का
प्रभाव वर्षा के वितरण, मस्तिष्क, प्रकृतियों की उत्पत्ति, जलवाय



U.P.S.C.

इस भाग में
कुछ न लिखें
(Don't write
anything in
this part)

के निर्णय आदि पर पड़ता है।



प्रश्न 4. जेट स्ट्रीम को समझाते हुए उसके प्रकार को समझाएं। (100 शब्द)

(10 अंक)

पुस्ती 10 किमी² की द्वारी पर छीतल, प्रचण्ड, झूर्णक, निलकृपुक्त, विसर्पाकार वायु का वैतिज प्रवाह (पश्चिम से पूर्व की ओर), जेट स्ट्रीम कहलाता है।

~~जेट स्ट्रीम की दो भागों पश्चिमी जेट स्ट्रीम (उच्चांश पहुँचा) व पूर्वी जेट स्ट्रीम (मानसूनी पवने) में बाह्य होता है। पश्चिमी जेट स्ट्रीम की धून: तीन भागों उपोष्ण पहुँचा जेट, द्वितीय सीमांग व द्वितीय वाति जेट में विभाजित किया होता है।~~

~~पश्चिमी जेट स्ट्रीम पश्चिम से पूर्व सभी माँसम में मूमण्ड़ पर परिसंचरण करती है। उपोष्ण पहुँचा जेट का निर्माण उपोष्ण उच्च दबावी से उष्ण धम्बवत हवाओं के उपोष्ण घुमकर उपोष्ण शैत में गिरने पर तथा सीमांग जेट का निर्माण वातावरण अनन्न (गर्म व शीतल हवाओं के मिलकर उपर उठने) तथा द्वितीय वाति जेट का निर्माण ठोड़ी हीकर ऊपर से ऊपर वाली वायु के तथा विषुवतीय भागों से द्वितीय वाति जेट (जो वाति में चबती है) द्वारा होता है।~~

पूर्वी जेट स्ट्रीम की दिशा



निर्माण IAS

Ph.: 011-47058219, 9990765484, 9891327521

प्रश्न संख्या
Question No. Name.....

Roll No.

U.P.S.C.

इस भाग में
कुछ न लिखें
(Don't write
anything in
this part)

पर्विचम से पूर्व तिल्खत के पार के द्वपर गर्म होकर बापु के
धम्बत उषर उठने से होता है। यह मानवी स्फीम है।

6

प्रश्न 5 सापेक्षिक आद्रता एवं निरपेक्ष आद्रता। (100 शब्द) (10 अंक)

सापेक्षित आद्रता → बायमॉडल में उपस्थित जलवाष्य के छाश
उस बापु का होगा गया शैत ही सापेक्षित
आद्रता कहलाता है। वर्षा व वार्षीकरण की मात्रा का
इस पर प्रभाव नहीं पड़ता। ~~जैसे इन्हाँ आयतन~~

निरपेक्ष आद्रता → बापु में उपस्थित जलवाष्य की मात्रा
ही उस बापु की निरपेक्ष आद्रता
कहलाती है। — unit → ग्राम झाँ घन मीटर
वार्षीकरण की किया से इसकी मात्रा में बहुत
होती है तथा इसकी वर्षा होने में सूमिका नहीं होती
है।

4

Beoz 100 words है 80

सापेक्षित आद्रता औं निरपेक्ष के example हैं, औं clear
का मतली है। 50% - 80%.



प्रश्न संख्या
Question No.

Name.....

Roll No.

U.P.S.C.

इस पाग में
कृत न लिखें
(Don't write
anything in
this part)

① प्रश्न 6.
पहली उम्मीदों

महाद्वीपीय विस्थापन सिद्धांत के त्रुटियों को संशोधित प्लेट विवरणिकी सिद्धांत ने किया।

(100 शब्द)

(10 अंक)

महाद्वीपीय किए
जाने वाले बने
प्लेट रोडों किए
जाएं जो कि

प्लेट विवरणिकी सिद्धांत महाद्वीपीय सिद्धांत का ही संबोधित
रूप है जिसकी उत्पत्ति विष्णु ने 1960 व 1967
में की।

② what is
महाद्वीपीय किए
जाएं जो कि

महाद्वीपीय सिद्धांत में व्याप्त त्रुटियों जैसे महाद्वीपीयों के
पश्चिम की ओर विस्थापन से झटके पर्वत का निर्माण,
समीक्षा की ज्यारीय ज्ञाति व शुरूत्वाकर्षण छल के लाभ
विस्थापन आदि त्रुटियों को इस किए तथा यह छल तक
सर्वाधिक व सर्वमात्र सिद्धांत है।

③ what is
व्याप्त त्रुटियों
जो कि

में प्लेटों के भेदित होने से तथा भूगर्भ में व्याप्त घासमान
ताज्हों से उत्पन्न सेवणीय घासों इस उच्च ताप व
दब पर अतिप्रभावी भूमा के दृष्टि (प्लेट से) व दरारों (विवरणिकी)
जारा सतह पर आकर निर्मित रेताकृतियाँ (महाद्वीपीय
भूमार) से हैं। महाद्वीपीय विवरणिकी का महाद्वीपीय सिद्धांत
इसका आधार बना परलू इस सिद्धांत की सर्वाधिक



निर्माण IAS

Ph.: 011-47058219, 9990765484, 9891327521

U.P.S.C.

सही माना गया।

1975 में अमेरिका के अधिकारी ने अमेरिका नगो वीकेपेडिक्याटो द्वारा दिए गए सभी राष्ट्र-वित्तीय जटि-हेतु गांव, इलाका, की आर्थिक-संरचना की शी यादगारी बनाए हुए। परं ऐसा हुआ कि उचित ली जाएगी।

last conclusion \Rightarrow ~~यह~~ at British India in 4/r
& in B.H. go to Rani and Raja, etc in R.A.M.D.P.
title /

प्रश्न ७.

प्रश्न 7. भूकंपीय तरंगों के आधार पर पृथ्वी के आंतरिक संरचना को समझाएँ। (100 शब्द) (10 अंक)

प्रकृतियी मुकेपीय लंगों के आधार पर यह स्पष्टतः कहा जा सकता है कि इच्छी के आन्तरिक संरचनाएँ में ताप, दाव, धनत्व आदि के आधार पर व्यापक असमानता व्याप्त हैं जिसके निम्न कारण हैं—

पूर्णी के भू-भेदनामों में व्याप्त असमानता के कारण ही
दुश्वर धर्षण आदि क्रिया के कारण मूक्यीय तरंगों (वड.)
की उत्पत्ति होती है।

→ P.T.S तरंगों का भूगर्भ के आन्तरिक भाग में क्राकार चलना इस बात की सुष्ठि करता है कि पृष्ठी के आन्तरिक भाग में दाढ़, तरंगात्मक में फ़िल्टर है।

⇒ P vs S लंगों के द्वारा स्थिरमैय दाया प्रैदेशिक का निर्माण होता है। इसी में व्यापक तापीय अन्तराल तथा Outer core के तश्वारस्या व धनत भृष्टि होने के कारण ही Pतंत्रण 103° से 145° तक है।

तथा अपवर्तन क्रिया द्वारा धापा प्रैंसों का निर्माण करते हैं



प्रश्न संख्या
Question No. Name.....
Roll No.

U.P.S.C.

इस भाग में
कुछ न लिखें
(Don't write
anything in
this part)

①

??

पृष्ठी की आंतरिक लंबवत्ति ??

प्रश्न 8. भूचुम्बकत्व क्या है? उसकी निर्माण प्रक्रिया तथा प्रासंगिकता को समझाएं। (100 शब्द) (10 अंक)

भूचुम्बकत्व → पृष्ठी शब्द स्वतः अर्थित डायनमीं की तरह हैं। जिसमें तरल बाध्य कोर व ठोस नीटेव व ठोस आन्तरिक कोर और लीच होने वाले वर्षण से चुम्बकीय गुणों का निर्माण होता है जिसे भू-चुम्बकत्व कहते हैं।

भूचुम्बकत्व की निर्माण प्रक्रिया का कारण बाध्य कोर का तरब होना, अरीप शुक्राव आदि हैं। इसी प्रासंगिकता निर्माणिकर्ता हैं।

- (1) पृष्ठी के बाध्य चुम्बकीय गुणों से वर्षण लकड़ी में
- (2) चुम्बकीय निरस के निर्माण जिसमें रॉकेट-परिप्रैलप आड़ि में सुविहा।
- (3) पृष्ठी में उपस्थित लौह कणों की जानकारी
- (4) पृष्ठी में उपस्थित चट्टानों का भ्राष्ट-निर्धारण
- (5) चट्टानों के निर्माण व विश्लेषण की भू वैज्ञानिक व्याख्या।

Ques 3
But
write
in short



निर्माण IAS

Ph.: 011-47058219, 9990765484, 9891327521